

RNA : Real News Analysis

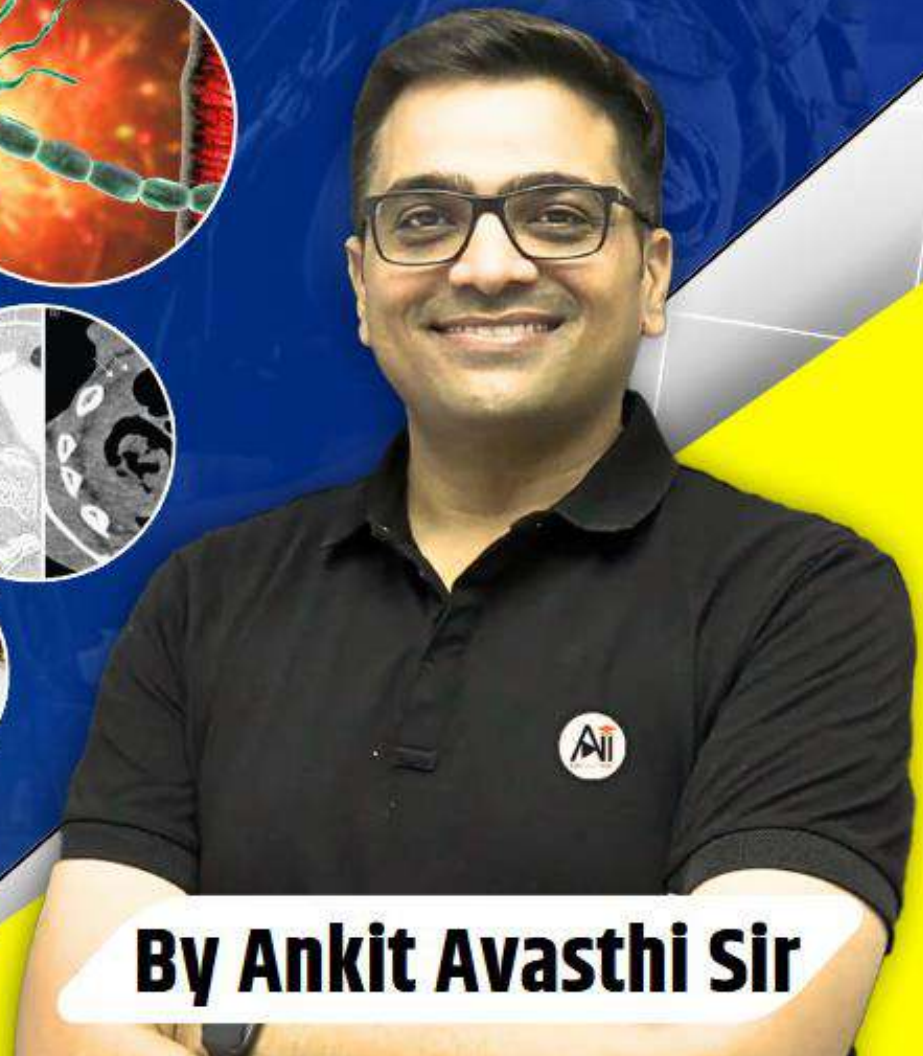
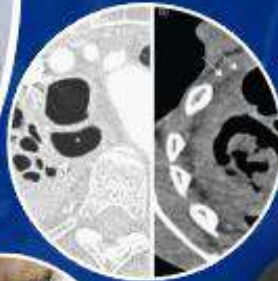
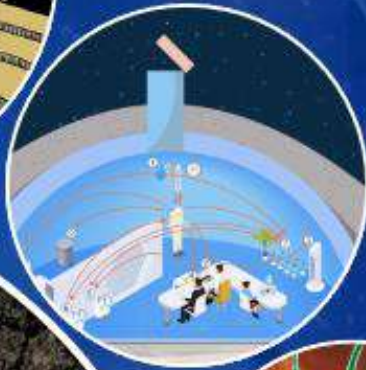
DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

Key Point

DATE
जनवरी
28
2025

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors



By Ankit Avasthi Sir

व्हिप प्रणाली क्या है ? / What is the Whip System?

संदर्भ:

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने हाल ही में कहा कि पार्टी व्हिप सांसदों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं क्योंकि यह पार्टी लाइन का पालन करने के लिए बाध्य करता है, इसलिए इसे समाप्त किया जाना चाहिए।

व्हिप के बारे में:

संसद में व्हिप एक लिखित आदेश होता है, जो किसी महत्वपूर्ण वोटिंग के दौरान पार्टी सदस्यों की उपस्थिति सुनिश्चित करने या उन्हें एक निश्चित दिशा में मतदान करने के लिए निर्देशित करता है।

व्हिप का महत्व:

किसी आदेश में जितनी बार रेखांकन (underlining) किया जाता है, उससे उसकी गंभीरता और पालन करने की अनिवार्यता का पता चलता है।

व्हिप प्रणाली की उत्पत्ति और भारत में पृष्ठभूमि:

1. व्हिप प्रणाली की उत्पत्ति:

- व्हिप शब्द को राजनीतिक विचारक एडमंड बर्क ने लोकप्रिय बनाया था।
- उन्होंने हाउस ऑफ कॉमन्स में महत्वपूर्ण मतदान के लिए समर्थकों को संगठित करने की प्रक्रिया को "व्हिप इन" कहा था।

2. भारत में व्हिप की पृष्ठभूमि:

- भारत के संविधान या संसद के नियमों में 'व्हिप' का कोई उल्लेख नहीं है।
- यह संसदीय शासन की परंपराओं पर आधारित है।

3. ऑल इंडिया व्हिप्स कॉन्फ्रेंस:

- 1952 में शुरू की गई इस कॉन्फ्रेंस में विभिन्न राजनीतिक दलों के व्हिप आपसी विचार-विमर्श और अनुभव साझा करते हैं।
- इसे संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित किया जाता है।

भारत में व्हिप प्रणाली का कार्यकरण:

1. पार्टी अनुशासन सुनिश्चित करना: व्हिप का मुख्य कार्य पार्टी अनुशासन बनाए रखना, सांसदों की उपस्थिति सुनिश्चित करना और महत्वपूर्ण वोटिंग के दौरान पार्टी लाइन का पालन कराना होता है।

2. सभी दलों में व्हिप की नियुक्ति:

- सत्ताधारी और विपक्षी, दोनों ही दलों के पास संसद में अपना मुख्य व्हिप (Chief Whip) और अन्य व्हिप होते हैं।
- व्हिप को राजनीतिक दल द्वारा सहायक फ्लोर लीडर के रूप में नियुक्त किया जाता है।

3. व्हिप की जिम्मेदारियां:

- सांसदों की उपस्थिति सुनिश्चित करना।
- किसी विशेष मुद्दे पर पार्टी के पक्ष या विपक्ष में समर्थन प्राप्त करना।
- संसद में सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित और मॉनिटर करना।

4. निर्देशों का पालन अनिवार्य:

- सांसदों को व्हिप के निर्देशों का पालन करना होता है।
- अगर कोई सदस्य व्हिप के निर्देशों की अवहेलना करता है, तो उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

व्हिप के प्रकार:

1. वन-लाइन व्हिप (One-line whip):

- इसे एक बार रेखांकित किया जाता है।
- इसका उद्देश्य पार्टी सदस्यों को मतदान के बारे में सूचित करना होता है।
- सदस्य चाहें तो पार्टी लाइन का पालन न करते हुए मतदान से अनुपस्थित रह सकते हैं।

2. टू-लाइन व्हिप (Two-line whip):

- इसे दो बार रेखांकित किया जाता है।
- यह सदस्यों को मतदान के दौरान उपस्थित रहने का निर्देश देता है।
- हालांकि, इसमें पार्टी लाइन का पालन करना अनिवार्य नहीं होता।

3. थ्री-लाइन व्हिप (Three-line whip):

- इसे तीन बार रेखांकित किया जाता है।
- यह सबसे मजबूत व्हिप होती है और इसे महत्वपूर्ण अवसरों पर जारी किया जाता है, जैसे:
 - विधेयक (Bill) के दूसरे पाठन के समय।
 - अविश्वास प्रस्ताव (No-confidence motion) के दौरान।
- इसमें सदस्यों के लिए पार्टी लाइन का पालन करना अनिवार्य होता है, अन्यथा अनुशासनात्मक कार्रवाई हो सकती है।

चंद्रमा की मिट्टी से सिलिकॉन कार्बाइड / Silicon Carbide from Moon's Soil

संदर्भ:

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (IIT-मद्रास) के हालिया शोध ने चंद्रमा के संसाधनों के उपयोग में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। शोधकर्ताओं ने चंद्रमा की मिट्टी के समान नमूने से सफलतापूर्वक सिलिकॉन कार्बाइड का निष्कर्षण किया है।

शोध के प्रमुख बिंदु:

1. सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) का उत्पादन:

- वैज्ञानिकों ने हाइड्रोजन रेजोलिथ सिमुलेंट को मीथेन के साथ उच्च तापमान पर मिलाकर सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) का निर्माण किया।
- सिलिकॉन कार्बाइड सिलिकॉन और कार्बन का संयोजन है।

2. चंद्रमा पर उपयोग: SiC का उपयोग चंद्रमा पर आवास निर्माण के लिए समग्र सामग्री (composites) बनाने में किया जा सकता है।

3. आगे के अनुसंधान की आवश्यकता: चंद्र रेजोलिथ से अधिक मात्रा में सिलिकॉन कार्बाइड उत्पादन के लिए और शोध आवश्यक है।

4. अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) में सबेटियर प्रक्रिया:

- इस प्रक्रिया में एस्ट्रोनॉट्स द्वारा उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड को इलेक्ट्रोलाइजर से हाइड्रोजन मिलाकर मीथेन और पानी में बदला जाता है।

चंद्र रेजोलिथ (Lunar regolith) के बारे में:

1. चंद्र रेजोलिथ (Lunar regolith) क्या है?

- यह चंद्रमा की सतह को ढकने वाली ढीली और खंडित सामग्री की परत है।
- इसमें बारीक धूल और चट्टानी टुकड़े शामिल होते हैं।
- वास्तविक चंद्र रेजोलिथ प्राप्त करना कठिन है क्योंकि यह दुर्लभ है।
- अब तक केवल सीमित मात्रा में इसे पूर्व चंद्र अभियानों के दौरान पृथ्वी पर लाया गया है।
- अनुसंधान उद्देश्यों के लिए कृत्रिम चंद्र मिट्टी तैयार की जाती है, जो वास्तविक चंद्र रेजोलिथ के गुणों की नकल करती है।

2. चंद्र सतह की संरचना:

- चंद्रमा पर दो प्रमुख भूभाग पाए जाते हैं - **मारिया** और **हाइलैंड्स**।
- मारिया:**
 - यह प्राचीन ज्वालामुखीय गतिविधि से बनी अंधेरी, समतल भूमि है।
 - मारिया में सिलिकॉन की मात्रा कम होती है।
- हाइलैंड्स:**
 - ये ऊँचे क्षेत्र हैं, जो सिलिकॉन, एल्युमिनियम और कैल्शियम ऑक्साइड से भरपूर हैं।
 - आवश्यक धातुओं को अलग करने के लिए इसमें से ऑक्सीजन को निकालना पड़ता है।

सिलिकॉन कार्बाइड का निष्कर्षण प्रक्रिया:

1. सिलिकॉन कार्बाइड क्या है?

- यह सिलिकॉन और कार्बन से बना एक यौगिक है।
- इसे इसकी **मजबूती और हल्के वजन** के लिए जाना जाता है।

2. चंद्रमा पर सिलिकॉन कार्बाइड उत्पादन:

- इसके लिए **कार्बन स्रोत** की आवश्यकता होती है।
- एस्ट्रोनॉट्स द्वारा छोड़ा गया **कार्बन डाइऑक्साइड** इस आवश्यकता को पूरा कर सकता है, लेकिन यह आसानी से प्रतिक्रिया नहीं करता।

3. सबेटियर प्रक्रिया (ISS में प्रयोग):

- इस प्रक्रिया में कार्बन डाइऑक्साइड को हाइड्रोजन के साथ मिलाकर मीथेन और पानी में परिवर्तित किया जाता है।
- हाइड्रोजन इलेक्ट्रोलिसिस से प्राप्त किया जाता है।
- मीथेन का उपयोग सिलिकॉन कार्बाइड उत्पादन में किया जा सकता है।

अनुसंधान का महत्व:

- सतत चंद्र अन्वेषण की दिशा में कदम:** कृत्रिम चंद्र मिट्टी से सिलिकॉन कार्बाइड का सफल निष्कर्षण चंद्रमा पर **स्थायी संसाधन उपयोग (In-Situ Resource Utilization)** की संभावनाओं को दर्शाता है।
- पृथ्वी से सामग्री परिवहन में कमी:** इस तकनीक के विकास से चंद्र मिशनों के लिए पृथ्वी से संसाधन ले जाने की **आवश्यकता कम होगी**, जिससे लागत और जटिलताओं में कमी आएगी।
- भविष्य के चंद्र अभियानों के लिए नए अवसर:** यह अनुसंधान चंद्र मिशनों और **चंद्रमा पर आवास निर्माण** के नए रास्ते खोलता है।
 - इस्पात जैसी मजबूत संरचनाओं के निर्माण में मदद मिलेगी, जिससे दीर्घकालिक मानव उपस्थिति संभव हो सकेगी।

गुइलेन बैरे सिंड्रोम / Guillain Barre Syndrome

संदर्भ:

महाराष्ट्र के पुणे में गुइलेन बैरे सिंड्रोम (GBS) के मामलों की संख्या 100 से अधिक हो गई है, जिसमें GBS से एक संदिग्ध मौत की सूचना है।

गुइलेन-बैरे सिंड्रोम (GBS) के बारे में:

1. क्या है गुइलेन-बैरे सिंड्रोम?

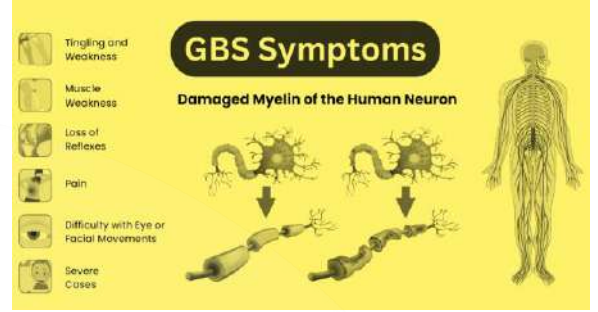
- यह एक **तंत्रिका संबंधी विकार** है जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली **परिधीय तंत्रिका तंत्र** (मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के बाहर का भाग) पर हमला करती है।
- यह मांसपेशियों की गतिविधि, दर्द के संकेत, तापमान और स्पर्श संवेदनाओं को नियंत्रित करता है।
- इसे **एक्यूट इन्फ्लेमेटरी डिमायलिनेटिंग पॉलीरेडिकुलोन्यूरोपैथी (AIDP)** भी कहा जाता है।
- यह किसी भी उम्र में हो सकता है, लेकिन 30 से 50 वर्ष के लोगों में अधिक आम है।

2. GBS के कारण:

- इसका सटीक कारण स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह आमतौर पर **वायरल या बैक्टीरियल संक्रमण, टीकाकरण या बड़ी सर्जरी** के बाद देखा जाता है।
- ऐसी स्थितियों में, प्रतिरक्षा प्रणाली अत्यधिक सक्रिय हो जाती है, जिससे यह दुर्लभ बीमारी होती है।

3. GBS का प्रभाव:

- **तंत्रिका क्षति:** परिधीय तंत्रिका तंत्र को कमजोर कर मस्तिष्क और मांसपेशियों के बीच संकेतों को बाधित करता है।
- **अस्थायी पक्षाघात:** यह दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकता है और गहन चिकित्सा देखभाल की आवश्यकता हो सकती है।
- **सुधार की अवधि:** अधिकांश रोगी कुछ हफ्तों या महीनों में ठीक हो जाते हैं, लेकिन गंभीर मामलों में लंबी पुनर्वास प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।



4. GBS के लक्षण:

- शुरुआत में **अज्ञात बुखार, कमजोरी, और तंत्रिका तंत्र से संबंधित अन्य लक्षण** दिखाई देते हैं।
- यह घंटों, दिनों या हफ्तों में तीव्र हो सकता है, जिससे कुछ मांसपेशियां पूरी तरह काम करना बंद कर सकती हैं।
- कुछ मामलों में हल्की कमजोरी होती है, जबकि कुछ में पूरी तरह से पक्षाघात हो सकता है, जिससे रोगी सांस लेने में असमर्थ हो जाता है।

5. गुइलेन-बैरे सिंड्रोम (GBS) का उपचार

1. इंद्रावीनस इम्यूनोग्लोबुलिन (IVIg):

- दान किए गए रक्त से प्राप्त स्वस्थ एंटीबॉडीज प्रदान करता है।
- प्रतिरक्षा प्रणाली के तंत्रिकाओं पर हमले को शांत करता है।

2. प्लाज्माफेरेसिस (प्लाज्मा एक्सचेंज):

- रक्तप्रवाह से हानिकारक एंटीबॉडीज को हटाता है।
- रोग की गंभीरता को कम करने में मदद करता है।

3. समर्थनात्मक देखभाल:

- **सांस संबंधी पक्षाघात के लिए वेंटिलेटर सहायता।**
- **पुनर्वास के लिए फिजिकल थेरेपी।**
- लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए निरंतर देखभाल आवश्यक है।

क्रॉनिक पल्मोनरी एस्पेरगिलोसिस / Chronic Pulmonary Aspergillosis (CPA)

संदर्भ:

हाल ही में एक शोध पत्र में पाया गया है कि असम के चाय बागानों में तपेदिक (TB) से उबर चुके श्रमिकों के फेफड़ों में क्रॉनिक पल्मोनरी एस्पेरगिलोसिस (CPA) नामक खतरनाक फंगल संक्रमण पाया जा रहा है।

क्रॉनिक पल्मोनरी एस्पेरगिलोसिस (CPA) क्या है?

1. परिभाषा:

- यह एक जीवन-घातक संक्रमण है जो **Aspergillus fumigatus** नामक फंगस के कारण होता है। यह संक्रमण **इम्यूनोडिफिशिएंसी** (रोग प्रतिरक्षा क्षमता में कमी) वाले व्यक्तियों को प्रभावित करता है।

2. घटित होने की स्थितियां:

- CPA एक **क्रॉनिक फेफड़ों की बीमारी** है, जो आमतौर पर पहले से मौजूद फेफड़ों के गुहाओं में होती है।
- यह उन लोगों में होता है जिनमें पहले से फेफड़ों की समस्या है:
 - पोस्ट-टीबी या सक्रिय टीबी मरीज।
 - एलर्जिक ब्रॉकोपल्मोनरी एस्पेरगिलोसिस**
 - अस्थमा**
 - फेफड़ों का कैंसर**
 - पोस्ट-कोविड-19 पल्मोनरी डैमेज**

3. लक्षण:

- क्रॉनिक खांसी
- हेमोराइसिस** (खांसी में खून आना)
- वजन घटना या थकान
- सांस लेने में कठिनाई और अन्य श्वसन संबंधी लक्षण।
- यदि इलाज न किया जाए तो यह **श्वसन विफलता** का कारण बन सकता है।

4. नैदानिक परीक्षण:

- रिडियोलॉजिकल इमेजिंग** और **सीरोलॉजिकल परीक्षण** (Aspergillosis IgG एंटीबॉडी का पता लगाना) के संयोजन से इसकी पुष्टि की जाती है।
- चेस्ट एक्स-रे** के माध्यम से फेफड़ों के गुहाओं का इमेजिंग किया जाता है।
- यह बीमारी अक्सर टीबी से समानता के कारण **गलत निदान** की जाती है।

क्रॉनिक पल्मोनरी एस्पेरगिलोसिस (CPA) का प्रभाव:

- मृत्यु दर और morbidity:** यदि इसका निदान या उपचार नहीं किया जाए, तो CPA से **मृत्यु दर और बीमारी की दर (morbidity)** बहुत उच्च हो सकती है।
- असम में CPA का प्रकोप:**
 - असम में CPA की प्रचलन दर **60 प्रति 1,00,000** है, जो **वैश्विक औसत (42 प्रति 1,00,000)** से अधिक है।
 - यह **नाइजीरिया और कांगो** जैसे कई अफ्रीकी देशों से भी ज्यादा है।

तपेदिक (टीबी) के बारे में:

1. क्या है तपेदिक?

- यह एक संक्रामक बीमारी है जो **Mycobacterium tuberculosis** बैक्टीरिया के कारण होती है। यह अधिकांशतः **फेफड़ों** को प्रभावित करती है, जिसे **फेफड़ों की टीबी (Pulmonary TB)** कहा जाता है।
- एक्स्ट्रापल्मोनरी टीबी** वह टीबी है जो शरीर के अन्य हिस्सों को प्रभावित करती है (जैसे, **गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल टीबी, कंकालीय टीबी, और यकृत टीबी**)।

2. संक्रमण का तरीका:

- यह **हवा** के माध्यम से फैलती है, जब संक्रमित व्यक्ति **खांसी, बात करना, हंसी, गाना, या छींकता** है।

3. सामान्य लक्षण:

- लंबे समय तक खांसी (कभी-कभी खून के साथ)
- छाती में दर्द
- कमजोरी और थकान
- वजन कम होना
- बुखार और रात में पसीना आना

4. पहचान के लिए परीक्षण: Xpert MTB, RIF Ultra, और Truenat assays का उपयोग किया जाता है।

5. उपचार:

- तपेदिक **रोकथाम योग्य** और **इलाज योग्य** है।
- सामान्य दवाइयाँ: **आइसोनियाजिड, रिफाम्पिन, एथामबुटोल, पायरजिनामाइड, स्ट्रेप्टोमाइसिन** आदि।
- Bacillus Calmette-Guerin (BCG)** टीका भी उपलब्ध है, जो तपेदिक की रोकथाम के लिए प्रयोग किया जाता है।

6. दवा-प्रतिरोधी तपेदिक (Drug-Resistant TB): यह वह तपेदिक है जो मानक दवाओं से **प्रतिक्रिया नहीं करता**।

पद्म पुरस्कार 2025 / Padma Awards 2025

संदर्भ:

वर्ष 2025 के लिए, राष्ट्रपति ने 139 पद्म पुरस्कारों को मंजूरी दी है, जिसमें 1 जोड़ी पुरस्कार (द्वय मामले) शामिल है। इसमें 7 पद्म विभूषण, 19 पद्म भूषण और 113 पद्म श्री पुरस्कार शामिल हैं।

- इस वर्ष की सूची में 23 महिलाएँ, 10 विदेशी/NRI/PIO/OCI श्रेणी के व्यक्ति, और 13 मरणोपरांत पुरस्कार प्राप्तकर्ता शामिल हैं।

Padma Vibhushan(7)

SN	Name	Field	State/Country
1.	Shri Duvvur Nageshwar Reddy	Medicine	Telangana
2.	Jeejee (Retd.) Shri Jagdish Singh Khehar	Public Affairs	Chandigarh
3.	Smt. Kumodini Rajnikant Lakhia	Art	Gujarat
4.	Shri LakshminarayanaSahramaniam	Art	Karnataka
5.	Shri M. T. Vasudevan Nair (Posthumous)	Literature and Education	Kerala
6.	Shri Osamu Suzuki (Posthumous)	Trade and Industry	Japan
7.	Smt. Sharda Sinha (Posthumous)	Art	Bihar

पद्म पुरस्कार के बारे में:

1. पद्म पुरस्कार क्या हैं?

- पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जो तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं:

- पद्म विभूषण
- पद्म भूषण
- पद्म श्री

2. घोषणा: ये पुरस्कार हर साल गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) को घोषित किए जाते हैं।

3. संस्थापन:

- पद्म पुरस्कारों की शुरुआत 1954 में हुई थी।
- यह पुरस्कार 1978, 1979, और 1993 से 1997 तक स्थगित रहे थे।

4. उद्देश्य: इन पुरस्कारों का उद्देश्य सभी क्षेत्रों या अनुशासन में विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों/सेवाओं को पहचानना है।

5. श्रेणियाँ:

- पद्म विभूषण:** असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए।
- पद्म भूषण:** उच्चतम स्तर की विशिष्ट सेवा के लिए।
- पद्म श्री:** किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए।
- पद्म विभूषण पद्म पुरस्कारों में सर्वोच्च है, इसके बाद पद्म भूषण और फिर पद्म श्री आता है।

6. अनुशासन: ये पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में दिए जाते हैं, जैसे कला, समाज सेवा, सार्वजनिक मामले, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल, नागरिक सेवा आदि।

7. योग्यता:

- सभी व्यक्ति, चाहे उनका जाति, पेशा, पद, या लिंग कुछ भी हो, पात्र होते हैं।
- सरकारी कर्मचारियों (PSUs में काम करने वालों को छोड़कर, सिवाय डॉक्टरों और वैज्ञानिकों के) को यह पुरस्कार नहीं मिल सकते।

8. नामांकन:

- कोई भी नागरिक (स्वयं नामांकन सहित) नामांकन की सिफारिश कर सकता है।
- नामांकन भेजने के लिए निम्नलिखित संस्थाएँ पात्र हैं:

- केंद्रीय मंत्रालय/विभाग, राज्य/केंद्र शासित क्षेत्र सरकारें।
- भारत रत्न और पद्म विभूषण पुरस्कार प्राप्त व्यक्ति।
- उत्कृष्ट संस्थाएँ।

9. पुरस्कार समिति:

- पद्म पुरस्कार समिति पुरस्कारों का निर्णय करती है।
- यह समिति प्रधानमंत्री द्वारा हर वर्ष गठित की जाती है।
- इसकी अध्यक्षता कैबिनेट सचिव करते हैं और इसमें गृह सचिव, राष्ट्रपति के सचिव और 4-6 प्रमुख व्यक्तित्व सदस्य होते हैं।

10. अंतिम स्वीकृति: समिति से सिफारिशें गृह मंत्री, प्रधानमंत्री, और राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत की जाती हैं, इसके बाद पुरस्कार की घोषणा गणतंत्र दिवस से पहले की जाती है।

11. पुरस्कार वितरण: यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोहों में प्रदान किए जाते हैं, जो आमतौर पर मार्च/अप्रैल में होते हैं।

कोडाइकनाल सौर वेधशाला / Kodaikanal Solar Observatory

संदर्भ:

बेंगलुरु में 'सूर्य, अंतरिक्ष मौसम, और सौर-तारकीय कनेक्शन' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के लिए भारत और विदेशों के 200 से अधिक सौर भौतिकविद एकत्र हुए।

- यह आयोजन भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (IIA) द्वारा आयोजित किया गया, जो कोडाइकनाल सौर वेधशाला (KSO) की 125वीं वर्षगांठ को चिह्नित करता है

सौर वेधशाला के बारे में:

सौर वेधशाला एक ऐसा केंद्र है जो सूर्य का अध्ययन और अवलोकन करने के लिए समर्पित होता है। इसके उदाहरणों में **नेशनल सोलर (अमेरिका)** और **कोडाइकनाल सौर वेधशाला (भारत)** शामिल हैं।

सूर्य का अध्ययन:

1. **सौर गतिविधियाँ पृथ्वी पर प्रभाव डालती हैं:**
 - सूर्य की आंधी और चमक पृथ्वी पर स्थित **सैटेलाइट्स, पावर ग्रिड्स, और संचार प्रणालियों** को प्रभावित कर सकती हैं।
2. **स्पेस मौसम की भविष्यवाणी:**
 - सौर वेधशाला **स्पेस मौसम** की घटनाओं की पूर्वानुमान करने में मदद करती हैं, जिससे सुरक्षा उपायों को लागू किया जा सकता है।
3. **मूलभूत भौतिकी को समझना:**
 - सूर्य का अध्ययन **न्यूक्लियर फ्यूजन** और **चुम्बकीय क्षेत्र** जैसी मूल प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है।

कोडाइकनाल सौर वेधशाला (KSO):

स्थापना और स्थान:

- **स्थापना:** 1 अप्रैल 1899
- **स्थान:** कोडाइकनाल, तमिलनाडु, पलानी पर्वत श्रृंखला में स्थित

कोडाइकनाल सौर वेधशाला में दूरबीनें:

- **डिजिटल रिपॉजिटरी:** यह ऑ जर्वेटरी **1.48 लाख डिजिटल सौर छवियों** का संग्रह करती है और हर दिन सौर चित्र रिकॉर्ड करती है, जो 20वीं सदी की शुरुआत से शुरू हुआ है।
- यह सौर गतिविधियों का **दुनिया का सबसे लंबा निरंतर दैनिक रिकॉर्ड** प्रस्तुत करता है।
- **विशिष्ट डेटाबेस:** यह डेटा **सार्वजनिक रूप से उपलब्ध** है और यह खगोलशास्त्रियों के लिए वैश्विक स्तर पर उपयोगी है।

अद्वितीय विशेषताएँ और योगदान:

1. **सौर अध्ययन में योगदान:** यह वेधशाला **सूर्य के उभरते अध्ययन** में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जैसे **हीलियम की खोज (1868)** और **सूर्य की प्लाज्मा प्रक्रियाओं** को समझना।
2. **सूर्य के प्रमुख घटनाएँ:** इसने **सूर्य के prominences और flares** के उत्पादन और उनके भौतिकी को समझने में भी अहम भूमिका निभाई है।
3. **वैज्ञानिक महत्त्व:** यह वैज्ञानिकों द्वारा **सूर्य के अध्ययन** में एक सदी से अधिक का अनुभव और निरंतरता का प्रतीक है।
4. **आयनमंडल के अध्ययन में योगदान:** इसने **आयनमंडल की घटनाओं** को समझने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (IIA):

स्वतंत्र संस्थान:

- **विभाग:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय (DST) के तहत एक स्वायत्त संस्थान।
- **स्थापना:** 1 अप्रैल 1971 को DST के तहत एक संस्थान के रूप में गठित।
- **मुख्य उद्देश्य:** खगोलशास्त्र, खगोल भौतिकी और संबंधित भौतिकी में अनुसंधान।
- **इतिहास:** इसका उद्भव **मद्रास ऑब्जर्वेटरी (1786)** से हुआ था।

नेतृत्व और दृष्टिकोण:

- **निदेशक:** प्रो. **अन्नपूर्णा सुब्रमणियम**
- **दृष्टिकोण:** प्रो. सुब्रमणियम ने **कोडाइकनाल सोलर ऑ जर्वेटरी (KSO)** की धरोहर और वैज्ञानिकों की पीढ़ियों के माध्यम से निरंतर नवाचार और कौशल के हस्तांतरण के महत्व पर जोर दिया है।

'डिजिटल वृक्ष आधार' पहल / 'Digital Tree Aadhar' initiative

संदर्भ:

जम्मू-कश्मीर सरकार ने क्षेत्र में घटते चिनार के पेड़ों के संरक्षण के लिए "ट्री आधार" मिशन शुरू किया है।

- इस पहल के तहत चिनार के पेड़ों की जनगणना की जाएगी और प्रत्येक पेड़ को एक विशिष्ट पहचान संख्या दी जाएगी, ताकि उनकी निगरानी और संरक्षण प्रभावी तरीके से किया जा सके।

डिजिटल ट्री आधार पहल:

क्या है डिजिटल ट्री आधार?

- आधार नंबर की तरह, प्रत्येक पेड़ को एक **विशिष्ट पहचान संख्या** (Tree Aadhaar) दी जाती है।
- इस पहल के तहत पेड़ों पर **मेटल कार्ड** लगाए जाते हैं, जिनमें **बारकोड** होता है।
- बारकोड के माध्यम से पेड़ की **स्थान, ऊंचाई और स्वास्थ्य** संबंधी जानकारी उपलब्ध होती है।

तकनीकी उपयोग:

- इस पहल में **QR कोड और भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS)** तकनीक का उपयोग किया जाता है।
- GIS एक कंप्यूटर प्रणाली है, जो **भौगोलिक रूप से संदर्भित जानकारी** का विश्लेषण और प्रदर्शन करती है।

मुख्य उद्देश्य:

- कश्मीर घाटी और चिनाब क्षेत्र में **चिनार पेड़ों की जनगणना** करना।
- चिनार पेड़ों की स्थिति की निगरानी और संरक्षण सुनिश्चित करना।

चिनार वृक्ष के बारे में:

विज्ञानिक नाम: प्लैनेटस ओरिएंटालिस वर. कश्मेरियाना (Platanus orientalis var. cashmeriana)

विशेषताएँ:

- चिनार एक **मैपल के समान विशाल छत्र वाला वृक्ष** है।
- यह मुख्य रूप से **पूर्वी हिमालय** में ठंडे जलवायु और पर्याप्त जल आपूर्ति वाले क्षेत्रों में पाया जाता है।
- इसकी ऊंचाई **30 मीटर तक** हो सकती है और तने की परिधि **10-15 मीटर तक** होती है।
- वृक्ष को **30-50 वर्षों** में परिपक्वता प्राप्त होती है, और पूर्ण आकार में आने में **150 वर्ष** लगते हैं।

'चिनार' नाम की उत्पत्ति:

- इस नाम को मुगलों द्वारा दिया गया, संभवतः **सम्राट जहांगीर** द्वारा।
- यह नाम **फारसी वाक्यांश "चे नार अस्त"** से प्रेरित है, जिसका अर्थ है **"यह कौन सी ज्वाला है?"**— जो कि शरद ऋतु में इसकी गहरे लाल पत्तियों की सुंदरता को दर्शाता है।

चिनार वृक्ष का पर्यावास और विशिष्टता:

पर्यावास:

- चिनार वृक्ष मुख्य रूप से **पूर्वी हिमालय** क्षेत्र में पाया जाता है और ठंडी जलवायु तथा पर्याप्त जल आपूर्ति में पनपता है।
- यह वृक्ष **जम्मू के चिनाब घाटी** और **पीर पंजाल घाटी** में उगते हैं।

विशिष्टता:

- इसकी **पत्तियाँ मौसम के अनुसार रंग बदलती हैं**, गर्मियों में गहरा हरा और शरद ऋतु में चमकदार लाल, एम्बर और पीले रंग में परिवर्तित हो जाती हैं।

चिनार वृक्ष के क्षय के कारण:

1. शहरीकरण:

- निर्माण और अधोसंरचना विकास के कारण प्राकृतिक आवास का विनाश।

2. जलवायु परिवर्तन:

- वर्षा के बदलते पैटर्न और अत्यधिक तापमान में वृद्धि से इसके विकास पर प्रतिकूल प्रभाव।

3. अवैध कटाई:

- संरक्षित स्थिति के बावजूद इसे लकड़ी के लिए अवैध रूप से काटा जाता है।

4. कीट और रोग:

- पर्यावरणीय तनाव के कारण रोगों और कीटों की संवेदनशीलता बढ़ जाती है।

आरबीआई लोकपाल योजना / RBI Ombudsman Scheme

संदर्भ:

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की एकीकृत लोकपाल योजना के तहत मार्च 2024 तक शिकायतों में 32.81% की बढ़ोतरी हुई है। कुल शिकायतों की संख्या बढ़कर 9,34,355 हो गई है।

आरबीआई - एकीकृत लोकपाल योजना, 2021:

परिचय:

यह योजना भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा तीन पूर्ववर्ती लोकपाल योजनाओं को एकीकृत करके एकीकृत प्रणाली के रूप में लाई गई है। ये तीन योजनाएँ थीं:

1. बैंकिंग लोकपाल योजना, 2006
2. गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) के लिए लोकपाल योजना, 2018
3. डिजिटल लेनदेन के लिए लोकपाल योजना, 2019

इस योजना का उद्देश्य विनियमित संस्थाओं (RES) के खिलाफ सेवा में कमी से संबंधित ग्राहक शिकायतों को प्रभावी और सुव्यवस्थित तरीके से हल करना है।

कवरेज:

- यह योजना सभी **वाणिज्यिक बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs), भुगतान प्रणाली भागीदारों,**
- अधिकांश **प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों** और **क्रेडिट सूचना कंपनियों** को कवर करती है।
- इसके अलावा, **₹50 करोड़ से अधिक जमा वाली गैर-अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक** और **क्रेडिट सूचना कंपनियों** को भी शामिल किया गया है।

आरबीआई - एकीकृत लोकपाल योजना, 2021 में शिकायतों का भौगोलिक वितरण और प्रकृति:

शिकायतों का भौगोलिक वितरण:

- **शीर्ष शिकायतकर्ता राज्य:**
 - चंडीगढ़, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीटी) दिल्ली, राजस्थान, गुजरात और उत्तराखंड में प्रति लाख खातों पर सबसे अधिक शिकायतें दर्ज की गईं।
- **न्यूनतम शिकायत दर वाले क्षेत्र:**
 - मिजोरम, नागालैंड, लद्दाख, मणिपुर और लक्षद्वीप में सबसे कम शिकायत दरें पाई गईं।
- यह भौगोलिक असमानता विभिन्न क्षेत्रों में बैंकिंग सेवा की गुणवत्ता पर प्रश्न उठाती है।

शिकायतों का स्वरूप:

• अनुचित बैंकिंग प्रथाएँ:

- ऋण स्वीकृति तिथि के बजाय वितरण तिथि से ब्याज शुल्क लगाने की शिकायतें।
- अनधिकृत शुल्क, घोखाधड़ी गतिविधियाँ, और व्यापारियों के साथ विवाद।
- क्रेडिट कार्ड रिवाइर्स और प्रचार लाभों को लेकर असंतोष।

आरबीआई की शिकायत निवारण तंत्र को बेहतर बनाने में भूमिका:

• ग्राहक-वित्तीय संस्थानों के विवाद निवारण में महत्वपूर्ण भूमिका:

- आरबीआई लोकपाल प्रणाली ग्राहकों और वित्तीय संस्थानों के बीच उत्पन्न विवादों को सुलझाने में अहम भूमिका निभाती है।

• डिजिटल बैंकिंग सेवाओं से संबंधित बढ़ती शिकायतें:

- पिछले वर्ष में दर्ज शिकायतों का बड़ा हिस्सा डिजिटल बैंकिंग सेवाओं से जुड़ा रहा।
- ऑनलाइन बैंकिंग के बढ़ते उपयोग के साथ इस क्षेत्र में चिंताएं बढ़ रही हैं।

महत्त्व:

- यह योजना ग्राहक सेवा को बेहतर बनाकर शिकायत निवारण की प्रक्रिया को **तेज और प्रभावी** बनाती है।
- ग्राहकों को **बेहतर पहुंच** और **पारदर्शिता** सुनिश्चित करती है।
- सभी वित्तीय संस्थाओं के लिए एक समान शिकायत निवारण प्रणाली प्रदान करती है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !



ANKIT AVASTHI

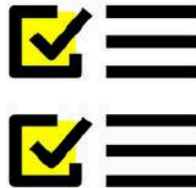


RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now



GA FOUNDATION

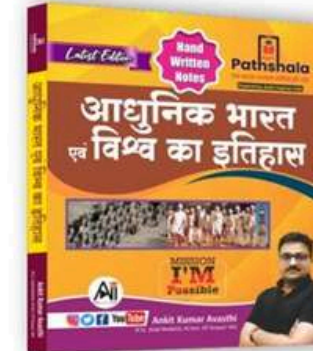
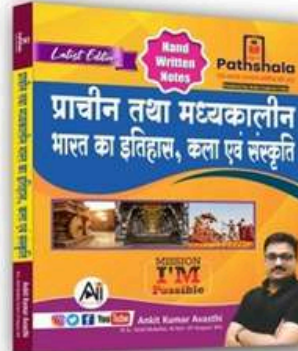
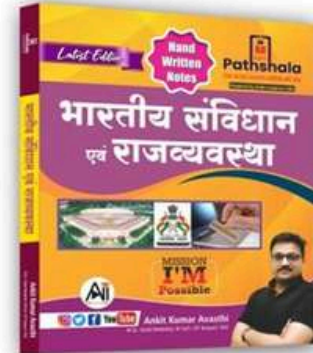
Hand Written
Notes


Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

**4 पुस्तकों का
सम्पूर्ण सेट**



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**



APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP

TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

▶ POLITY ▶ ECONOMICS
▶ HISTORY ▶ GEOGRAPHY

FOR ALL

 DAILY LIVE CLASSES

 WEEKLY TEST

 CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)

 LIVE DOUBT SESSIONS

 DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs

4999/-



Apni Pathshala  7878158882

 Apni.Pathshala  kaankit  AnkitAvasthiSir  Avasthiankit

ONLY POLITY



1499
RS

DAILY LIVE CLASSES

-  WEEKLY TEST
-  CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
-  LIVE DOUBT SESSIONS
-  DAILY PRACTISE PROBLEM

Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!

